गुवाहाटी-असम। 'जीवन की पुन: इंजीनियरिंग' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन कार्यक्रम में त्रिपुरा के राज्यपाल महोदय प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला। साथ हैं अनिल भुयान,पूर्व मुख्य अभियंता, ब्र.कु. भारत भूषण,राष्ट्रीय समन्वयक,वैज्ञानिक एवं इंजीनियरिंग प्रभाग तथा अन्य।

नेपाल-बोदेबरसाइन(राजबिराज)। स्नेह मिलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व कृषि एवं सहकारी मंत्री मृगेन्द्र कुमार सिंह यादव, समाजसेवी हरेकृष्ण सिंह, ब्र.कु. भगवती तथा ब्र.कु. पूनम।

साउथ अफ्रीका। 'द अफ्रीकन वुमेन इन डायलॉग' विषयक पाँच दिवसीय कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् चित्र में फॉर्मर फर्स्ट लेडी ज़नेले,एम्बेकी फाउण्डेशन, ब्र.कु. वेदांती, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. दीप्ती तथा अन्य।

हाजीपुर-बिहार। सेवाकेन्द्र में नये हॉल के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मणि,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शीला, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजली तथा ब्र.कु. आरती।

राउरकेला-ओडिशा। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'नि:शुल्क नेत्र एवं मधुमेह चिकित्सा शिविर' के दौरान पद्मिनी पानीग्रही को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।

कर्म के साथ फल जुड़ा हुआ ही है

- गतांक से आगे...

भगवान अर्जुन से कहते हैं कि जो फल है वो परछाई की तरह हर कर्म के साथ जुड़ा हुआ ही है। फिर फल की कामना करना या उससे अधिक की कामना करने से, क्या वो प्राप्त हो जायेगा? कर्म हम थोड़ा करें और फल अधिक चाहें, तो क्या ये मिलेगा? अरे जो परछाई जैसी होगी उसी अनुसार वो प्राप्त होना है। उसकी इच्छा को लेकर के कर्म करना, ये तो यथार्थ नहीं है। इसमें हम अपने विचारों की शक्ति को यूं ही व्यर्थ गँवा रहे हैं। जिसने जितनी भावना से जैसा कर्म किया, उसका फल वैसे ही उसके साथ जुड़ जाता है। चाहे आप इच्छा करो या न करो। ये जुड़ा हुआ ही है। उससे अधिक इच्छा करने पर वो मिलने वाला नहीं है। इसलिए भगवान बार बार कहते हैं कि इसमें अपना समय, व्यर्थ क्यों गंवा रहे हो? आसक्ति और फल के त्याग को ही सात्विक त्याग माना गया है। मनुष्य कर्म कर भी रहा है लेकिन यह समझता है अरे, ये तो दु:ख भरा जीवन है। अर्थात् बार बार उस दु:ख के प्रति अफसोस करता रहता है या शारीरिक कष्ट के भय से इसका त्याग कर देता है। सोचता है ये कर्म मैं नहीं करूंगा, पता नहीं कहीं मुझे शारीरिक कष्ट न भोगना पड़े। अर्थात् नियत कर्म को दु:ख समझ करके करता है। ये समझकर उस कर्म का त्याग करते हैं तो ये राजसी त्याग हो गया जिसमें फल की प्राप्ति नहीं होती है। नियत कर्म का जो मोह वश त्याग करता है। जैसे आज एक माँ अपने बच्चे के मोह वश कुछ अलग त्याग भी करती है तो वह त्याग तामसिक त्याग हो गया। क्योंकि ये मोहग्रस्त त्याग है। सम्पूर्ण कर्म का त्याग संभव नहीं है। परंतु जो कर्म के फल के त्यागी हैं यही शुद्ध सन्यास है। यह सन्यास चरम उत्कृष्ट अवस्था है। भगवान ने स्पष्ट किया कि तीन प्रकार के त्याग कौन से हैं। उसमें सात्विक त्याग कैसे सहज हम अपने जीवन के अंदर ले आयें। राजसिक त्याग माना, जो कष्ट समझ करके उसको छोड़ देते हैं। इसमें त्याग नहीं हुआ। जहाँ मोह वश कुछ त्याग कर भी देते हैं तो ये तामसिक त्याग में आ जाता है। आगे भगवान ने कहा कि : हे भरत श्रेष्ठ, मन, वाणी, कर्म से कोई भी कर्म मनुष्य नीति सम्मत या नीति विरूद्ध करता है, उसके पाँच कारण हैं। अधिष्ठान, कर्ता, कारण, इच्छाएं व संस्कार। अधिष्ठान अर्थात् क्षेत्र, शरीर, स्थान (जहाँ हैं)। कर्ता कौन है? तो मन से प्रेरित होकर के आत्मा करती है। जो भिन्न भिन्न इंद्रियां हैं वो साधन बन जाती हैं, कारण के लिए। इच्छाएं : जो प्रकृति जन्य प्रवृत्तियां हैं : सतो, रजो, तमो : इनमें हम लिप्त होते हैं, इच्छा के वश। और अंत में है प्रालब्ध या हमारे संस्कार। ये पाँच चीज़ें हर कर्म के प्रति लगती हैं चाहे वो मन, वाणी या कर्म हो। कोई भी व्यक्ति नीति सम्मत करे या नीति विरूद्ध करे ये पाँच बातें इस विधि में आ जाती हैं।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

असंस्कारी बुद्धि वाला अपने को ही कर्ता समझता है। मैं के अभिमान में आ जाता है। वह दुर्गति को समझता नहीं। पर जो अहंकार भाव से ऊपर उठता है और जिसकी बुद्धि अलिप्त है, वो बंधनमुक्त हो जाता है। वह ईश्वरीय नियम में चलता हुआ ही कर्म करता है। इसमें भी तीन अवस्थाएं हैं। एक है देहभान, दूसरा है अभिमान और तीसरा है अहंकार। ये तीन स्टेजेज़ हैं। अहंकार सबसे बुरा है। क्योंकि वो अनेक आत्माओं को बहुत दु:ख पहुंचाने वाला है। अभिमान उससे थोड़ा कम है। अभिमान माना क्या? अभिमान दो शब्द से बना है। अभि-मान अर्थात् कोई भी इंसान जब भी छोटा मोटा कर्म करता है तो उसके मन के अंदर तुरंत ये भाव आ जाता है कि अभी अभी मुझे मान मिलना चाहिए। जहाँ ये मान प्राप्त करने की इच्छा आ गयी, ये है अभिमान। उसमें भले वो दूसरे को दु:ख न भी देता हो, लेकिन अपने अभिमान की पुष्टि ज़रूर करता है। जहाँ उसको मान मिल जाता है वहाँ वो खुश हो जाता है। आत्म तृप्ति का अनुभव करता है। उस भान में आकर वो कोई भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है। - क्रमशः

तुम जियो हज़ारों साल, साल के दिन हों पचास हज़ार....

2 जनवरी 2019, आपके 80वें जन्म दिन की आपको ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। आप यूं ही परमात्मा का संदेश सारे विश्व में पहुंचाकर सबको खुशियां बांटते रहें।

ब्रह्माकुमार करुणा भाई जी,
मल्टीमीडिया चीफ,ब्रह्माकुमारीज़,
माउण्ट आबू

यह जीवन है...

आज सब सुविधाओं के बावजूद आप दु:खी हैं क्यों? जैसे किसी वृक्ष का सम्बंध अगर उसकी जड़ों से टूट जाये तो वृक्ष जीवित नहीं रह सकता। आपके जीवन की जड़ें आपके भीतर हैं लेकिन आप उनसे टूटे हुए हैं। जिसकी वजह से जहाँ शान्ति और आनन्द होना चाहिए, वहाँ आप नर्क भोग रहे हैं। बाहर धन कमाइए परंतु भीतर के द्वारा अपनी जड़ रूपी आत्मा को भी सींचिये, फिर देखिये जीवन में आनन्द ही आनन्द है या नहीं।

ख्यालों के आईने में...

जो ज्ञानी होता है उसे समझाया जा सकता है, जो अज्ञानी होता है उसे भी समझाया जा सकता है। परन्तु जो अभिमानी होता है उसे कोई नहीं समझा सकता, उसे केवल वक्त ही समझा सकता है।

खुशखबरी!! नये वर्ष की अनुपम सौगात 'अवेकनिंग'

सर्व ब्राह्मण कुलभूषण निमित्त भाइयों और बहनों, ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वर्ष 2019 की अनुपम सौगात एक नवीन आध्यात्मिक चैनल '**अवेकनिंग**' का शुभारंभ किया गया है। यह चैनल 24 घंटे प्रसारित होता है, और नित नये रचनात्मक कार्यक्रमों से भरपूर है। आप सभी इस चैनल को देखने के लिए नीचे दी गई तकनीकी जानकारी अपने केबल ऑपरेटर से साझा कर उनसे इस चैनल को चालू करने का अनुरोध कर सकते हैं। इसके साथ ही इस चैनल को इसकी वेबसाइट, फेसबुक और यू-ट्यूब में भी लाइव देखा जा सकता है।

साथ साथ यह चैनल जिओ टी.वी. एप्प पर भी उपलब्ध है। आप इसे अन्य सभी से शेयर करना ना भूलें।

Satellite-GSAT-17-93.5
D/L Frequency-4085 MHz
Symbol Rate-30.0 MSPS
FEC-5/6
Roll of 20%
D/L Polorization-Vertical

site: http://awakeningtv.in
http://youtube.com/awakeningtv
http://facebook.com/awakeningtv

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।